अनुसन्धान प्रवाह Anusandhan Pravah
(An Open Access, Peer Reviewed, Multidisciplinary, Bilingual, E-Journal)
ISSN: 3108-1541
Vol.2, Issue 1, Year 2025, pp.130-141
URL : https://journal.sskhannagirlsdc.ac.in/

# विवेकी राय के उपन्यासों में नारी चित्रण

**पूनम मौर्या* & डॉ०आदित्य कुमार त्रिपाठी****

*शोध छात्रा, एस०एस० खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज प्रयागराज।

**सहायक आचार्य, एस०एस० खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज प्रयागराज।

**सारांश:**

सृष्टि के विधान में नारी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और अनिवार्य मानी गई है। नारी को सृजन, पालन और संरक्षण की आधार शिला माना गया है। मातृत्व के माध्यम से नारी न केवल नई सृष्टि को जन्म देती है बल्कि संस्कार, प्रेम साहित्य में नारी का स्थान अत्यंत गरिमामयी रहा है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक नारी को विविध रूपों में प्रस्तुत किया गया है। भक्तिकाल में नारी को भक्ति, त्याग और प्रेम की प्रति मूर्ति के रूप में देखा गया। रीति काल में नारी का चित्रण प्रायः सौन्दर्य और श्रृंगार तक सीमित रहा। आधुनिक काल में नारी को केवल सहन शील नहीं , अपितु जागरूक, संघर्षशील और आत्मनिर्भर व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया गया। भारतीय समाज में नारी की स्थिति समय के साथ निरंतर परिवर्तनशील रही है। जहाँ वैदिक काल में नारी को सम्मान जनक स्थान प्राप्त था। वहीं मध्यकाल में नारी की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गयी। विवेकी राय के उपन्यासों

Article Publication:
Published online on: 30/12/2025

Corresponding Author:

**पूनम मौर्या**
शोध छात्रा, एस०एस० खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज प्रयागराज

Email: mmpoonam92@gmail.com

©S.S. Khanna Girls Degree College

Scan For Paper

में नारी को सामाजिक यथार्थ की सशक्त प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत किया गया है। लेखक के नारी पात्र में ग्रामीण समाज की परंपराओं, रूढ़ियों और आर्थिक अभावों के बीच जीवन यापन करती हुई भी अपनी अस्मिता बनाए रखती है। लेखक ने नारी के जीवन आने वाले दुःख, पीड़ा, संघर्ष और सहनशीलता को अत्यंत स्वाभाविक रूप में उकेरा है।

**मुख्य शब्द-** *नारी, वैदिक काल, हिन्दी साहित्य, भक्तिकाल, रीति काल, आधुनिक काल ग्रामीण समाज, जाति प्रथा, शोषण और सामाजिक अन्याय, अशिक्षा और गरीबी।*

सृष्टि के विधान में नारी की भूमिका पुरुष से अधिक महत्वपूर्ण है, इस कारण उसे संसार में पूजनीय माना है। नारी की स्वाभाविक कोमलता, उदारता और आकर्षक उसे दैवीय स्थान दिलाता है। आदिकाल से नारी पुरुष की संगिनी रही है, और ईश्वरीय सृजन का दायित्व जितना पुरुष के कंधों पर है, उतना ही नारी के कंधों पर भी है। नारी सृष्टि सहिष्णुता एवं वात्सल्य गुणों से युक्त मानी जाती है। जयशंकर प्रसाद का यह कथन नारी की महत्वा को सिद्ध करता है-

**"नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में,**
**पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।"[1]**

नारी कल्याणकारी मंगल कार्य की प्रेरणा स्रोत है, वह श्रद्धेय नहीं अपितु श्रद्धा का साक्षात् अवतार है। नारी के कुछ महत्वपूर्ण गुण जैसे- दया, करुणा, क्षमा, स्नेह और समर्पण। ये सभी उसे सुदृढ़ बनाते हैं जो उसे परिवार, समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में मदद करते हैं । अतः नारी प्रेम और सहानुभूति के परिचायक परिवार की स्तंभ होती है। स्त्रियां अपने ज्ञान और विज्ञान को अपने हृदय में समेटे हुए, अपनी कर्मठता और ममता से समाज को जीवन और ऊर्जा प्रदान करती हैं। वे अपने विभिन्न कार्यों और भूमिकाओं के माध्यम से धरती को जीवन का अमृत प्रदान करती हैं, जिससे संपूर्ण वसुधा को उनका उपकार मिलता है। यह उनके करुणा, परिश्रम और प्रेम का प्रतीक है, जो समाज को उन्नति और सजीवता प्रदान करता है। इस जगत में जो कुछ भी सरल और सुंदर है, उसमें नारी का महत्वपूर्ण योगदान है। नारी की संवेदनशीलता और सौंदर्य बोध ही इस संसार की सादगी का आधार है। वह इस सृष्टि

का अनुपम वरदान है, उपहार है। नारी के बिना सृष्टि का सौंदर्य और उसकी सादगी अधूरी है। प्राचीन काल से ही नारी को सौंदर्य, शक्ति और ज्ञान का प्रतीक माना गया है, जिसे दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय साहित्य में नारी की महत्वा को रेखांकित किया गया है, जो सामाजिक संरचना तथा उसके स्वव्यवस्थित विकास में भारतीय स्त्रियों की भूमिका को प्रस्तुत करता है। नारी ब्रह्म विद्या, सृष्टि शक्ति और पवित्रता की प्रतीक है, वह संसार की सभी उत्कृष्टताओं का प्रतिबिंब है। वह जन्मदात्री और पालनहार है। उसे प्राचीन समय से ही दया, त्याग, समर्पण, ममता की प्रति मूर्ति माना जाता है किंतु आधुनिक समय में, आर्थिक पराधीनता के कारण नारी का व्यक्तित्व अत्यंत शोचनीय स्थिति में पहुंच गया है। इस संदर्भ में राष्ट्रीय कवि मैथिलीशरण गुप्त जी कहते हैं-

**"अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी,**
**आंचल में है दूध और आंखों में पानी।"**[2]

समाज में रूढ़ियों, परंपराओं तथा अशिक्षा के कारण नारी का जीवन अत्यंत दयनीय अवस्था में पहुंच गया है। सामाजिक कुप्रवृत्तियां जैसे- सती-प्रथा, बाल-विवाह आदि के प्रभाव से नारी जीवन दूषित हो गया। भारतीय समाज में समय-समय पर महिलाओं की स्थिति में गिरावट आती गई। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में नारियां आजीवन पिता, पुत्र और पति के संरक्षण में जीवन यापन करती हैं।

वैदिक काल में नारियों का स्थान और सम्मान काफी ऊंचा था। वेदों में महिलाओं को विद्या और शिक्षा के अधिकार प्राप्त थे। ऋग्वेद में कई विदुषी महिलाओं का उल्लेख मिलता है, जैसे कि घोषा, लोपामुद्रा, गार्गी, मैत्री आदि। ये महिलाएं न केवल धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेती थीं बल्कि वेदों का अध्ययन और शिक्षण भी करती थीं। उन्हें समाज में उच्च स्थान प्राप्त था। मनुस्मृति में कहा गया है- "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।" अर्थात् जहां नारियों की पूजा होती है, वहां देवता का निवास होता है। किंतु ब्राह्मण काल तक आते-आते महिलाओं की स्थिति में गिरावट शुरू हो गई। ऐसे में नारियां जहां वैदिक काल में रत्नों की तरह सम्मानित थी, वहीं ब्राह्मण काल में अनेक

समस्याओं से घिर गई।

हिंदी साहित्य में नारी के वीरांगना एवं कामिनी दोनों रूपों के दर्शन होते हैं किंतु नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व की झलक नहीं दिखाई देती है। आदिकाल के रासो साहित्य में सती व पतिव्रता स्त्री की प्रशंसा की गई है। पृथ्वीराज रासो में पृथ्वीराज चौहान के बंदी होने पर संयोगिता समेत अन्य रानियों के सती होने का जिक्र मिलता है। भक्तिकालीन कवियों में कबीरदास जी नारी की निंदा करते हुए कहते हैं- "कबीर नारी की प्रीति से, केटे गए गरंत, केटे और जाहिंगे, नरक हसंत- हसंत"[4]। वैसे कबीर ने कामिनी नारियों की निंदा की है अन्यथा स्वयं ईश्वर के प्रति अपने प्रेम को अभिव्यक्त करते समय 'राम की बहुरिया' कहा है। नारी से ही पुरुष की उत्पत्ति होती है। कबीर नारी के मातृत्व रूप की प्रशंसा करते हैं-

**"नारी निंदा ना करो, नारी रतन की खान।**
**नारी से नर होत हैं, ध्रुव, प्रह्लाद समान।।"**

ज्ञानमार्गी संतों के भांति ही प्रेम मार्गी कवि जायसी ने 'पद्मावत' में रानी पद्मावती ब्रह्म का प्रतीक मानकर प्रशंसा करते हैं, वहीं सामान्य नारी के रूप में नागमती को गोरख धंधा कह कर उनकी क्षुद्रता की ओर संकेत किया है। सगुण काव्य धारा के कवि सूरदास ने नारी के प्रति भक्ति और प्रेम को अपने पदों में स्थान दिया। वे अपने काव्य में विशेष रूप से उनके महान ग्रंथ 'सूरसागर' में नारी की महत्वा को पुरुष से कम नहीं आँका है। सूरदास जी नारी की भक्ति प्रेम और समर्पण को अत्यंत महत्वपूर्ण और पूजनीय माना है। अतः सूरदास के काव्य में नारी को पुरुषों के बराबर दर्जा दिया गया है। राम काव्य में स्त्री का स्पष्ट विरोध नहीं मिलता है। किंतु गोस्वामी तुलसी दास कहते हैं- 'कत विधि सृजी नारी जग माही, पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं' इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने समाज की स्त्रियों की पराधीनता को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। रीतिकाल ने स्त्रियों के यौन कला तथा प्रेम को वस्तु में बदलकर इनका बाजारीकरण कर दिया है। आधुनिक काल में राजाराम मोहन राय एवं ईश्वर चंद्र विद्यासागर के प्रयासों से सती प्रथा, बाल विवाह, विधवा विवाह आदि सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया गया और स्त्री शिक्षा को बढ़ावा मिला। छायावादी कवियों ने नारी की महत्वा स्वीकार करते हुए देवि, माँ, सहचरी प्राणप्रिये, जननी आदि उपाधि से विभूषित किया है। वर्तमान समय में स्त्रियों के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, अधिकार प्राप्त हैं। देश या

समाज का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहाँ न पहुंची हो। आज महिलाएं अपनी पहचान स्वयं स्थापित कर रही हैं और साथ ही पुरुषों की सफलता में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से योगदान दे रही है। किंतु ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय है।

ग्रामीण क्षेत्र की नारियां अत्यधिक श्रम के बाद भी अपने अस्तित्व की पहचान नहीं बना पा रही है। वहां आज भी साहूकारों, महाजनों, ठेकेदारों द्वारा स्त्रियों का आर्थिक व सामाजिक शोषण किया जा रहा है। अशिक्षा के कारण स्त्रियों को विभिन्न प्रकार की यातनाएं सहनी पड़ रही हैं और समस्याओं का सामना भी कर रही हैं। ग्रामीण जीवन के सशक्त कथाकार डॉ॰ विवेकी राय ने अपने उपन्यासों में उत्तर प्रदेश के पिछड़े इलाकों की शोषित पीड़ित नारियों का चित्रण किया है। परंतु उनके उपन्यासों की मुख्य पात्र महिलाएं नहीं है। डॉ॰ राय ने पतिव्रता, गृहणी, विधवा, परित्यक्तता, शोषित, पीड़ित विद्रोही और नारी जीवन के विविध पहलुओं को उजागर किया है। डॉ॰ गोपाल राय का कथन है कि- “हिंदी साहित्य में नारी जागरण की कल्पना अनेक रूपों में की गई है। नारी की अस्मिता की पहचान में आज अनेक उपन्यास लेखिकाएँ लगी हुई है।- पर विवेकी राय जी ने आधुनिक नारी की जो पहचान प्रस्तुत की है वह तेजस्वी, और गरिमामय है।”

डॉ॰ राय के प्रथम उपन्यास ‘बबूल’ में निम्न वर्गीय चमार जाति की शोषित-पीड़ित नारियों का सजीव चित्रण किया गया है। जो अज्ञानता, अशिक्षा और गरीबी की वजह से जीवन भर कष्ट और यातना सहने को मजबूर है। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र महेसवा की माँ दरपनी को अपने पति की मृत्यु के अगले ही दिन बेसहारा स्त्री को प्रसूति गृह से निकलकर नौकरी की तलाश करनी पड़ी। उसे अनेक कष्ट,यतनाओं एवं समस्याओं का सामना करना पड़ा। नायक महेसवा की पहली पत्नी सुनरी का गरीबी एवं आर्थिक अभाव के कारण उचित उपचार न हो सका जिससे वह मियादी बुखार से ग्रसित होकर मृत्यु को प्राप्त करती है। महेसवा का दूसरा विवाह पालकी से होता है। पालकी अपने पति के साथ खेतों में मजदूरी कर जीवन यापन करती है। वह जमींदारों द्वारा शोषण का शिकार होती है इस प्रकार पालकी जैसी नारियों के आर्थिक मजबूरी का फायदा उठाकर उनका शोषण किया जाता है। वैधव्य प्राप्त दरपनी के समक्ष नरेश का विवाह के लिए दबाब भी शोषण के दायरे में आता है। इतना ही नहीं, भर फाँड साग खोटने पर जमींदार का लड़का दरपनी को बेरहमी से मारता है। धनाभाव के कारण दरपनी को तन ढकने के लिए गज भर

वस्त्र भी नसीब नहीं हुआ। वह अपनी लाज छिपाने में असमर्थ होकर कुएं में कूद कर जान दे दी। इस प्रकार कथाकार ने दरपनी की आत्महत्या दिखाकर समाज में नारियों की असहायता, गरीबी, यातना व शोषण का शिकार हुई नारियों की दर्दनाक स्थिति का चित्रण किया है।

विवेकी राय का दूसरा उपन्यास 'पुरुष- पुराण' में कुम्हार जाति की नारी की मार्मिक स्थिति का अंकन किया गया है। लेखक ने कुम्हार की नारी को एक प्रतीकात्मक पात्र के रूप में प्रस्तुत किया है जो पारंपरिक समाज में महिलाओं के शोषण, उनकी सीमित स्वतंत्रता और उनकी संघर्षशीलता को दर्शाता है। जहां एक तरफ महिलाएं अपनी पहचान और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रही है। वहीं दूसरी ओर उनका जीवन समाज की कठोर सीमाओं परंपराओं के अधीन होता है। इस उपन्यास में नारी पात्र जाति प्रथा तथा परंपरागत समाज की व्यवस्थाओं के विरुद्ध आवाज उठायी है। कथाकार ने दुखन के माध्यम से स्त्री को छोटी जाति कहलवाकर सामाजिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं – "सोचता हूँ कि औरत जैसी छोटी जात के लिए महावीर सामी को क्यों गुहरावें।"[3] ईश्वर की कृपा प्राप्त करने का अधिकार सभी को समान रूप से हैं। किंतु यह पंक्ति समाज में स्त्रियों को कमतर आंकने वाली मानसिकता तथा उसके प्रति भेदभाव को स्पष्ट करता है। लेखक कुम्हार जाति के दुखन तथा उसके पतोहू के बीच के संघर्ष के संदर्भ में कहते हैं- "झगड़ा दूखन और उनकी पतोहू का नहीं, पुरानी और नई पीढ़ी का है उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी का है।"

'लोकऋण उपन्यास में विवेकी राय ने नि:संतान एवं धर्मपरायण नारी का चित्रण अत्यंत गहराई और संवेदनशीलता के साथ किया है। धर्मराज की पत्नी बड़की नि:संतान होते हुए भी अपने धार्मिक, सामाजिक एवं पारिवारिक कर्तव्यों का पालन पूरी निष्ठा एवं समर्पण के साथ करती है। यह नारी के नि:स्वार्थ भाव, त्याग एवं समर्पण को उजागर करती है। त्रिभुवन की पत्नी वितनी घरेलू कार्यों में संलग्न स्त्री का उत्कृष्ट उदाहरण है। वह अपनी मेहनत, धैर्य और समर्पण से अपने परिवार को संजोए रखती है किंतु उसकी अनगिनत भूमिकाओं और योगदान की सराहना करने के बजाय अपने ही घर में एक अभिशप्त जीवन जीने के लिए मजबूर है। अपनी शारीरिक सुंदरता और आकर्षण से छ: बच्चों की मां होने के बावजूद भी धरमू जैसे साधु व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करने में सक्षम है। प्रोफेसर गिरीश चंद्र की पत्नी एक अशिक्षित और झगड़ालू महिला है, जिसे तंबाकू, हुक्का पीने एवं चोरी करके सामान पीहर

भेजने की आदत है। गिरीश उससे ऊबकर उसकी आदतों के बारे में कहता है- "अरे चंडालिनी अभी तो कल उसे बाजार से लाया था ... एक महीने चलने वाला चावल, दाल और आटा पन्द्रह दिन में ही समाप्त हो जाता है- छि: छि: यह नारी है कि साक्षात नरक।"[4] कनिया के चरित्र में एक असभ्य, अशिक्षित और अशिष्ट नारी की छवि स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। प्राध्यापक की प्रिय शिष्या कविता, जो कला और साहित्य में गहरी रुचि रखती है, प्राध्यापक अपनी पत्नी से अलगाव के कारण उसे अपनी इच्छाओं की पूर्ति का जरिया मानता है। राय जी ने लोकऋण में पति-पारायण झगड़ालू, नि: संतान और पढ़ी-लिखी महिलाओं की मानसिक स्थिति को उजागर किया है। डॉ॰ सर्वजीत राय का मत है कि- "महिला पात्रों की उपेक्षा या कम समझदारी, लोकऋण में लक्षित की जा सकती है। वे विशिष्ट पात्रों के मनोवेगों को दिशा दे देती है। लेकिन उनकी अपनी वे चारित्रिक विशेषताएं नहीं उभर पाती जिन्हें कथा विस्तार में उनकी सक्रिय भागीदारी कहा जा सके।"

'समर शेष है' उपन्यास की जयंती शिक्षित नवयुवती है वह एस.डी.ओ. साहब की पुत्री और सुराज की प्रेमिका है। उसने गांव के उन्नति के लिए जन आंदोलन किया है। लेखक ने जनशक्ति और नारी शक्ति के सम्मिलन को विशेष रूप से उजागर किया है जयंती का चरित्र एक नयापन लिए हुए है। जयंती के जरिए राय जी नें गांव की महिलाओं के विद्रोही स्वर को मजबूत किया है। इसी प्रकार जानकी नाथ की मां एक सबला है जो अपने परिवार के लिए प्रेरणा स्रोत के रूप में कार्य करती है। वह अपने परिवार के लोगों को मुश्किल समय में हिम्मत और संबल प्रदान करती है। पूरे गांव के लिए वह आदर्श एवं सम्मान की पात्र है। जानकी नाथ को हत्या के झूठे आरोप में जेल जाने का दु:ख न करते हुए रोने वाले रामराज को संघर्षशील परिस्थितियों से जूझने की प्रेरणा देते हुए कहती है- "तुम उठते लड़ाकू जवान होकर इस तरह रोओगे, तो मौत के किनारे खड़ी इस महतारी की क्या हालत होगी? अभी क्या, अभी तो लड़ाई शुरू हुई है। आगे पता नहीं क्या-क्या होगा?"[5] जयंती नारी शक्ति प्रतीक के रूप में कार्य करते हुए नवयुवती एवं नारियों की ऊर्जा शक्ति प्रेरणा के रूप में कार्य करती है। वह नारी की स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहती है- "हमारे देश में स्त्री जाति के प्रति लोगों का दृष्टिकोण अभी घोर स्वार्थ, छल प्रतिक्रिया और दकिया नूसी पूर्ण है। .... खून में गुलामी भरी है।"[6]

'सोनामाटी' उपन्यास में कमली, कोइली, सुनरी, रामकली, रामस्वरूप की मां, विद्या, कान्त आदि नारी

पात्र है। आर्थिक तंगी के कारण, कोइली और उसकी छोटी बच्ची सहित हनुमान प्रसाद के रिश्तेदार सुग्रीव ने चार हजार में क्रय कर लिया है। हनुमान प्रसाद उसे बंदिनी बना रखा है जो उसके दर्दनाक जीवन की एक कड़वी सच्चाई है। एक दिन कोइली उस बंदीगृह से बचकर भाग जाती है। वह अपने जीवन की करुण गाथा मास्टर रामरूप को सुनाती है- "अपने गरीब बाप के घर जवान हुई तब से हर आदमी हमारे पास खास काम के लिए ही आया है मास्टर जी। कहिए, सेज लगा दूं, अपने को सौप दूं.......... यदि सुग्रीव जी की तरह आप भी कहीं और सौदा करने आए हो तो सुख भोग के लिए उस पांचवें बाबा के पास चलूँ?"[7] इस प्रकार उपन्यास में नारी पीड़ा को प्रस्तुत करते हुए कोइली के चारित्र को अत्यन्त सशक्त बनाया है। वह जमींदार वर्ग की वासना का शिकार बनी कोइली बुद्धि जीवी रामरूप के समक्ष अपनी यथार्थ कहानी बयां करके समाज की नग्न सच्चाई को उजागर करती है। कमली रामरूप मास्टर की इकलौती पुत्री है। वह अपनी संयमिता का पालन करती है, इसी कारण भारतेंदु वर्मा के अनैतिक आचरण को उजागर करने में सक्षम है। रामरूप की पत्नी रामकली भारतीय नारी के आदर्श रूप में प्रस्तुत है। जो परिवार के भरण-पोषण में कुशल पतिव्रता नारी के रूप प्रस्तुत है। यह परंपरागत नारी का प्रतिनिधित्व करती है। रामरूप की बूढी माँ धार्मिक जीवन जीने वाली स्त्री है, जो व्रत, उपवास और तीर्थयात्रा को अपने जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा मानती है। सुनरी निम्न जाति की शोषित नारी का प्रतिनिधित्व करती है। विद्या और कांता भी उपन्यास के सशक्त नारी है जो पढ़ी-लिखी लड़की के रूप में सामने आती है उनमे उच्च-शिक्षा प्राप्त करने की लालसा है।

'सोनामाटी' के स्त्री पात्र के बारे में परमानंद श्रीवास्तव जी अपने लेख सोना माटी मूल्य क्षय की त्रासदी में लिखते हैं- "वास्तविकता यह है कि सोना माटी में एक भी स्त्री नहीं है जिसमें संघर्ष की चेतना या क्षमता दिखाई देती हो, यह स्त्रियां सिर्फ बर्दाश्त करती हैं। कोइली या कमली के चरित्र में भी कोई स्वतंत्र विशिष्टता दिखाई नहीं देती।"[8]

'मंगल भवन' की पार्वती भी क्रांतिकारी नारी की भूमिका अदा करती हैं वह अपने नेतृत्व और संगठनात्मक क्षमता का प्रयोग करके गांव की महिलाओं को एक जुट करती है और उन्हें राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रेरित करती है । राम मंदिर निर्माण, क्रीडा संकूल योजना में सहकार्य करती है । पुन्ना चौधरी के द्वारा गड़ही हड़पने पर रोक लगा देती है – "मैं तो चाहती हूं कि वह केस करे । एक बार फिर घर के बाहर निकल गई तो इस गुंडे को दिखा दूँ कि 'अति' वाले की क्या गति होती है ।" इस प्रकार पार्वती का विद्रोही स्वभाव और अन्याय के प्रति

उसकी विरोध की भावना साफ झलकती है, वह एक असाधारण वीर महिला है। बिना किसी प्रचार – प्रसार के अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व के सहारे चुनाव जीतकर गाँव की सभापति बन जाती है। भारत-चीन युद्ध के समय अपने फौजियों की मदद के लिए स्वयं कलेक्टर के पास खड़ी होकर गांव की महिलाओं के गहने, पैसे देने के लिए आह्वन करती है। तुलसी की पत्नी अज्ञानता, अशिक्षा एवं झगड़ालू नारी का प्रतिमान है इसलिए उसे रणचंडी भी कहते है। मेरा हाथ-पैर पटक-पटककर उंगलियां चमका–चमका कर चरचर-चरखा निरंतर चलता रहता है। वह कहती है –" मैं मंथरा हूँ मैंने ही गोली चला कर और सेंध काटकर तुम्हारे राम-लक्ष्मण को वनवास दिया है?.... मुह में कीड़े पड़ जाएंगे। जीभ गल जाएगी। नरक में भी जगह नहीं मिलेगी।.... पिंडा खाएंगे? सरग जाएंगे? खुद को साधु बखानने वाला अपना पापी मुंह नहीं देखता है।"

रण विजय की पत्नी लक्ष्मी को 'मंगल भवन' की साक्षात लक्ष्मी कहा जाता है। वह हमेशा सही-गलत अच्छा-बुरा को समझने वाली है। लक्ष्मी पारिवारिक दबाव के चलते झुक झुकाकर जीवन व्यतीत करती हैं परंतु जब उसके सास–ससुर, बड़े ससुर मेजर जगदीश का अपमान करते हैं तो उसका विरोध करती है – इस प्रकार लक्ष्मी 'मंगल भवन' के सेतु के रूप में कार्य करती है। वह गांव की एक साधारण परंतु दृढ़ संकल्पी महिला है। लक्ष्मी का चरित्र सामंजस्य और स्नेह का प्रतीक है। लेखक उसे अमंगलहारिणी विशेश्वरी महामाया मां लक्ष्मी स्वरूप की संज्ञा से अभिहित करते हैं।

इस प्रकार 'बबूल' उपन्यास चमार जाति की महिलाओं के दारुण और कष्टमय जीवन का सजीव प्रतिबिंब है। यह उनके संत्रास, संघर्ष और सामाजिक अन्याय का मार्मिक चित्रण करता है जो उन्हें जातिगत भेद-भाव और अत्याचार दिन प्रतिदिन झेलने पड़ता है। इन स्त्रियों का दोहरा शोषण होता है एक तो स्त्री होना, दूसरा दलित होना। 'लोकऋण' उपन्यास उच्च वर्ग की महिलाओं की आंतरिक भावनाओं और मानसिक संघर्षो को उजागर करने में सक्षम है यह उपन्यास स्त्रियों के सामाजिक दायित्वों, पारिवारिक जिम्मेदारियों तक ही सिमट कर रह गया। 'समरशेष' की जयंती एक क्रांतिकारी नारी का प्रतीक है, जो अपने विचारों और कर्मों से समाज में बदलाव लाना चाहती है। 'पुरुष पुराण' में दुखन कुम्हार की पतोहू को नई पीढ़ी के तौर पर प्रथा के विरुद्ध संघर्ष करने वाली महिला के रूप में चित्रित किया गया है। वह पुरानी प्रथाओं को चुनौती देकर सामाजिक सुधार और बदलाव की दिशा में अग्रसर होती

है। 'सोनामाटी' में निम्न जाति की कोइली की बिक्री तथा उन दबे-कुचले तबके की स्त्रियों के जीवन में कठिनाईयों और संघर्षों को अभिव्यंजित करती है। 'मंगल भवन' में सभापति पार्वती बहना ने सभी को प्रभावित किया है जिसकी प्रभावकारी तस्वीर अंकित किया है।

अतः डॉ० विवेकीराय ने अपने उपन्यासों में अशिक्षित, शोषित, ध्वंसित और क्रांतिकारी देहाती नारियों के जीवन की विवेचना की है, जिससे उनकी अद्वितीय और प्रेरणादायक गाथा उजागर होती है। लेखक ने अपनी कलम से व्यक्तिगत और सामाजिक परिस्थितियों की गहराइयों में समाज की समस्याओं और दरिद्रता की असली तस्वीर पेश की है। डॉ० राय के उपन्यासों में स्त्रियों का चित्रण बहुत सुंदर और गहरा है। उन्होनें अपनी रचनाओं में सभी वर्गों की स्त्रियों के जीवन को विभिन्न पहलुओं से प्रस्तुत किया है जैसे उनकी व्यक्तिगत अनुभव, पारिवारिक और सामाजिक परिस्थितियां, स्वतंत्रता की तलाश और उनकी सामाजिक स्थिति। लेखक इन सभी माध्यमों के द्वारा व्यक्तिगत और सामाजिक प्रश्नों को रचनाओं में पेश किया है, जिससे स्त्रियों के अनुभवों और उनके दृष्टिकोण को समझना होगा। इस प्रकार उनके उपन्यासों में शोषित स्त्री, पीड़ित नारी, शिक्षित नारी, गृहिणी आदि विविध रूपों में स्त्री चरित्र सम्मुख आते हैं। गांव का माहौल ऐसा है कि महिलाओं को अपनी जरूरतों और इच्छाओं के लिए हमेशा दूसरों पर निर्भर रहना पड़का है। आजादी के बाद स्त्रियों को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्तर पर समान अधिकार प्राप्त हुए। जिससे स्त्री समाज में आर्थिक एवं वैचारिक स्तर पर बदलाव आया। किंतु इसका फायदा केवल शहरी महिलाओं को मिला है। ग्रामीण महिलाएं इस लाभ से बंचित रही हैं। लेखक ग्रामीण स्त्रियों के संदर्भ में 'नमामि ग्रामम्' उपन्यास में कहा कि – "गांवों में नारी वर्ग अपने को छिपा कर आज भी अज्ञान की बेहोशी में पड़ा है। यह परिस्थिति ही पुरुषों को अवसर देती है कि वे स्त्रियों को भी अपनी संपत्ति समझे। उनकी स्वतंत्रता का हरण करें एवं उनके केश को सतत् अपनी बज्रमुट्ठी में रखें।"[9] डॉ० राय उच्च वर्ग की नारियों की अपेक्षा निम्न वर्ग की नारियों को सच्ची सहधर्मिणी मानते हैं। उनके अनुसार वे स्त्रियां घर में, खेत में, देश में, परदेश में, आराम में, सुख में, दुःख में, और जीवन के प्रत्येक मोड पर साथ रहती हैं। जहां स्त्रियां पूर्णतया: पुरुषों पर निर्भर रहती हैं वहा उसकी स्थिति अबला की होती है। इस उपन्यास में लेखक विवाह जैसे विषय पर अपने विचार स्पष्ट किए हैं। अनमोल विवाह, बाल विवाह, दहेज प्रथा आदि के कारण स्त्रियों का जीवन कितना कष्टमय हो जाता है, इसकी ओर लोगों का ध्यान

आकर्षित किया है। स्त्रियों की अशिक्षा में गरीबी मुख्य कारण है, परंतु दहेज प्रथा आज के समाज में एक गंभीर विकृति के रूप में उभरी है। जो एक बड़ा कारण है। डॉ० राय ने विधवाओं की दयनीय दशा की तुलना एक पुष्प से करते हुए कहा है कि- "जिसे ना तोड़ा जा सकता है, न देव पर चढ़ाया जा सकता है। वह स्वयं झड़ भी नहीं पड़ती, भौरों को भी मना है उधर जाना। वह डाल पर पड़ी-पड़ी सहमी हुयी सौरभ विखेरती मुरझाने की प्रतीक्षा किया करती है।"[10] लेखक का मानना है कि किसी घर को बनने और बिगड़ने में एक स्त्री का हाथ होता है। 'अमंगल हारी' उपन्यास में जगदीश और तुलसी दोनों भाइयों के प्रेम सूत्र को तोड़ने का कार्य तुलसी की पत्नी करती है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विवेकीराय ने अपने उपन्यासों में ग्रामीण स्त्रियों के जीवन को यथार्थ रूप में स्पष्ट किया है। जहां एक ओर मानवीय संवेदनाओं से युक्त तेजस्वी नारियों का अंकन होता है। 'अमंगल हारी' की लक्ष्मी साहस के साथ संघर्ष करती, मंगलभवन की पार्वती साहस और धैर्य के साथ सामाजिक और राजनीतिक कार्यों में अग्रसर है। 'समर शेष है' की जयंती शक्ति स्वरुपा है, जानकी नाथ की बूढी मां सशक्त एवं प्रेरक के रूप में है। वहीं दूसरी ओर 'लोक ऋण' तथा 'सोना माटी' की नारियां पारंपरिक साँचे में निर्लिप्त अपने-अपने धर्म का निर्वाहन करती हैं। उपेक्षा सहती हैं, बर्दाश्त करती हैं, शोषित होने के बाबजूद भी उनमें उनमें अपनी स्थिति का बोध रहता है। इस प्रकार लेखक ने अपने उपन्यासों में ग्रामीण दलित पीड़ित नारियों का यतार्थ चित्रण किया है तथा मध्यवर्गीय नारियों की मानसिक स्थिति को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

## संदर्भ ग्रंथ-

1. प्रसाद, जयशंकर (2012). कामायनी. इलाहाबाद: लोक भारती प्रकाशन. पृ०सं०- 35
2. गुप्त, मैथिली शरण(2010). यशोधरा. नई दिल्ली: राज कमल प्रकाशन, पृ०सं०- 61.
3. राय, विवेकी (2007). पुरुष पुराण, वाराणसी: अनुराग प्रकाशन, पृ०सं०- 05
4. राय विवेकी(2018). लोक ऋण. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन, पृ०सं०- 13.
5. राय विवेकी(2011). समर शेष है. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन, पृ०सं०-443.
6. राय, विवेकी. समर शेष है. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन, पृ०सं०-153.

7. राय, विवेकी (2010). सोनामाटी. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन, पृ०सं०-27.

8. आलोचना अंक 72 जनवरी-मार्च 1985 पृ०सं०-17

9. राय, विवेकी (2011). नमामि ग्रामम्. नई दिल्ली: विद्या विहार प्रकाशन, पृ०सं०-50.

10. राय, विवेकी(2011). नमामि ग्रामम्. नई दिल्ली: विद्या विहार प्रकाशन, पृ०सं०-169.